[Total No. of Printed Pages-5 Roll No. _____

1(CCE-M)6

HINDI - II

[28]

Time Allowed: 3 Hours *Maximum Marks-300*

INSTRUCTIONS

i) *Answers must be written in Devanagari*

ii) *The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.*

iii) *The answer to each question or part there of should begin on a fresh page.*

iv) *Your answer should be precise and coherent*

v) *The part/parts of the same question must be answered together and should not be interposed between answers to other questions.*

vi) ***Candidates should attempt Five questions.Question No.1 is compulsory and remaining four questions selecting atleast two questions from each section.***

vii) *If you encounter any typographical error, please read it as it appears in the text book.*

viii) *Candidates are in their own interest advised to go through the general instructions on the back side of the title page of the answer script for strict adherence.*

ix) *No continuation sheets shall be provided to any candidate under any circumstances.*

x) *Candidates shall put a cross(X) on blank pages of answer script.*

xi) *No blank page be left in between answer to various questions.*

xii) *No programmable calculator is allowed.*

xiii) *No stencil(With different markings) is allowed.*

xiv) *In no circumstances help of scribe will be allowed.*

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** अवतरणों की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए: **(20×4=80)**

क) भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार।

मनसा बाचा क्रमनाँ, कबीर सुमिरण सार।।

मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहिं आहि।

अब मन रामहिं ह्वै रह्या, सीस नवावौं काहि।।

ख) बिन गोपाल बैरनि भईं कुंजैं।

तब ते लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।

बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।

पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजैं।

ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि भारत लुंजै।।

8. 'कामायनी' एक प्रतीकात्मक काव्य है, विचार कीजिए। **(55)**

9. 'राम की शक्तिपूजा' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए। **(55)**

10. भाषा और शिल्प की दृष्टि से 'शेखरः एक जीवनी' की समीक्षा कीजिए। **(55)**

11. 'अंधेरे में' कविता समकालीन यथार्थ का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है– इस कथन की विवेचना कीजिए। **(55)**

◆◆◆◆

ज) .... ओ मेरे आदर्शवादी मन,

ओ मेरे सिद्धांतवादी मन,

अब तक क्या किया?

जीवन क्या जिया!!

उदरम्भरि बन अनात्म बन गये,

भूतों की शादी में क़नात से तन गये,

किसी व्यभिचार के बन गये बिस्तर।

प्रत्येक खण्ड से दो-दो प्रश्न करना अनिवार्य है।

Section - A

2. कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। **(55)**

3. 'भ्रमरगीत' के संदर्भ में सूर की गोपियों की मनोदशा का वर्णन कीजिए। **(55)**

4. 'अंधेर नगरी' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। **(55)**

5. 'गोदान' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है- समीक्षा कीजिए। **(55)**

6. 'चन्द्रगुप्त' के आधार पर जयशंकर प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना पर विचार कीजिए। **(55)**

Section - B

7. हिंदी निबंध के विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के योगदान पर विचार कीजिए। **(55)**

ग) गए लखनु जहँ जानकिनाथू। भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू।।

बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए।।

कहहिं परसपर पुर नर नारी। भलि बनाइ बिधि बात बिगारी।।

तन कृस मन दुखु बदन मलीने। बिकल मनहुँ माखी मधु छीने।।

घ) कर रही लीलामय आनंद-महाचिति सजग हुई-सी व्यक्त,

विश्व का उन्मीलन अभिराम-इसी में सब होते अनुरक्त।

काम-मंगल से मंडिल श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,

तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भावधाम।

ङ) किसी को भी दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं है। उपजीवी होना घोर लज्जा की बात है। कर्म करना प्राणीमात्र का धर्म है। समाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमें कुछ लोग मौंज करें और अधिक लोग पीसें और खपें, कभी सुखद नहीं हो सकती।

च) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसीप्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं।

छ) धर्म संस्कृति का आदर्श नियम है, इसलिए धर्म की बुराइयाँ संस्कृति से पैदा होतीं, इसलिए संस्कृति बुरी है, यह केवल तर्कना-शक्ति का, नट का तमाशा है। संस्कृति की बुराई अगर हमें देखनी है, तो संस्कृति में स्पष्ट देखनी होगी, इस प्रकार दूर से सिद्ध नहीं करनी होगी।